Hindi Lit. Class 8 Test 1

1

सुख-दुख

(कविता)

प्रतिध्वनि

"सुख और दुख एक सिक्के के दो पहलू हैं। सुख जब मनुष्य के पास आता है तो दुख का मुकुट पहनकर आता है।"

– स्वामी विवेकानंद

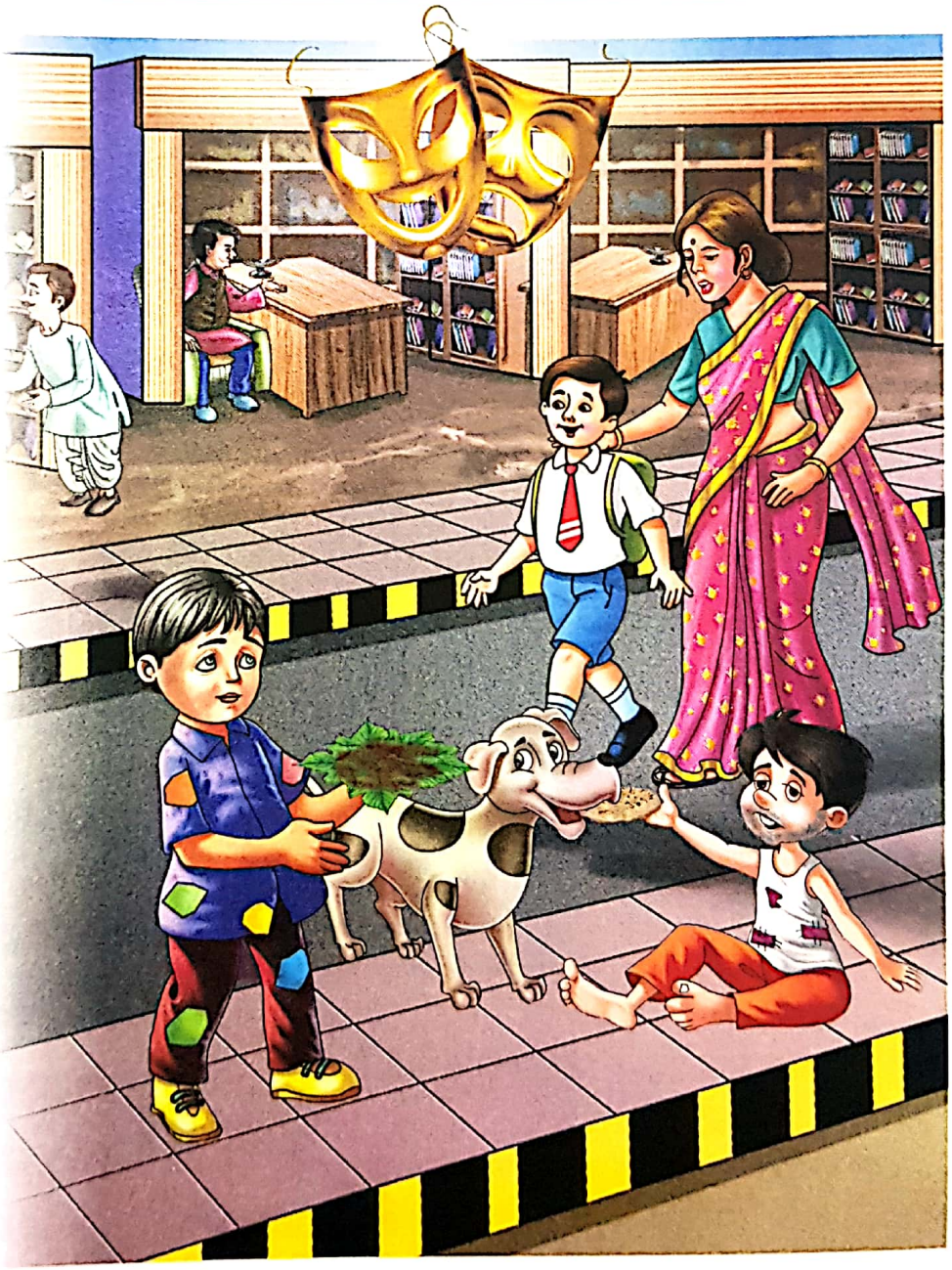

मैं नहीं चाहता चिर-सुख,
मैं नहीं चाहता चिर-दुख,
सुख-दुख की खेल मिचौनी
खोले जीवन अपना मुख!

सुख-दुख के मधुर मिलन से
यह जीवन हो परिपूरण,
फिर घन में ओझल हो शशि,
फिर शशि से ओझल हो घन!

जग पीड़ित है अति दुख से
जग पीड़ित रे अति सुख से,
मानव जग में बँट जाएँ
दुख सुख से और सुख दुख से!

अविरत दुख है उत्पीड़न,
अविरत सुख भी उत्पीड़न,
दुख-सुख की निशा-दिवा में,
सोता-जगता जग-जीवन।

यह साँझ-उषा का आँगन,
आलिंगन विरह-मिलन का,
चिर हास-अश्रुमय आनन,
रे इस मानव-जीवन का!

–सुमित्रानंदन पंत

जीवन मूल्य : सुख-दुख का सामंजस्य ही जीवन में संतुलन लाता है।

Scanned with CamScanner

शब्दार्थ

चिर	हमेशा, लंबे समय तक	घन	बादल
परिपूरण	संपूर्ण, युक्त	अविरत	लगातार
ओझल	गायब	दिवा	दिन
शशि	चंद्रमा	उषा	भोर

पाठ्यविषयी मूल्यांकन (Curricular Assessment)

लिखित [Writing Skills (comprehension, spelling, vocabulary, grammar)]

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जीवन में सुख-दुख की खेल-मिचौनी क्यों जरूरी है?

(ख) कवि ने सुख-दुख की तुलना किससे की है?

(ग) सुख या दुख की अधिकता को कवि ने उत्पीड़न क्यों बताया है?

(घ) जीवन में सुख-दुख का संतुलन क्यों आवश्यक है?

(ङ) कवि ने मानव जीवन का उद्देश्य क्या बताया है?

2. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

(क) मैं नहीं .... खेल-मिचौनी।

(ख) फिर घन .... हो घन।

(ग) मानव-जग .... दुख से।

(घ) चिर हास .... जीवन का।

3. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए– [Multiple Choice Questions (MCQs)]

(क) घन (बादल) में क्या ओझल हो जाता है?

(i) रवि ◯ (ii) शशि ◯ (iii) तारे ◯

(ख) जग (संसार) जिस रात्रि में सोता है, उसे कवि ने क्या कहा है?

(i) दुख ◯ (ii) सुख ◯ (iii) विरह ◯

(ग) जीवन सुख-दुख के मधुर मिलन से बनता है....

(i) अद्‌भुत ◯ (ii) खेल-मिचौनी ◯ (iii) परिपूर्ण ◯

(घ) जीवन .... का आंगन है।

(i) सुख-दुख ◯ (ii) निशा-दिवा ◯ (iii) साँझ-उषा ◯

(ङ) मानव-जीवन का आनन (चेहरा) कैसा है?

(i) खेल-मिचौनी जैसा ◯ (ii) हास-अश्रुमय ◯ (iii) सुख-दुखमय ◯

2

नादान दोस्त

(कहानी)

प्रतिध्वनि

"दोस्त और शिष्टाचार आपको वहाँ ले जाएँगे, जहाँ धन नहीं ले जा पाएगा।" – मार्गरेट वॉकर

केशव के घर, कॉर्निस के ऊपर, एक चिड़िया ने अंडे दिए थे। केशव और उसकी बहन श्यामा दोनों बड़े ध्यान से चिड़िया को वहाँ आते-जाते देखा करते। दोनों सवेरे ही आँखें मलते-मलते कॉर्निस के सामने पहुँच जाते तथा चिड़ा और चिड़िया दोनों को वहाँ बैठा पाते। उन्हें देखने में दोनों बच्चों को न मालूम क्या मज़ा मिलता, दूध और जलेबी की सुध भी न रहती थी। दोनों के दिल में तरह-तरह के सवाल उठते। अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? कितने बच्चे होंगे? उनमें से बच्चे किस तरह निकलकर आएँगे? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे? घोंसला कैसा होगा? लेकिन इन बातों का जवाब देने वाला कोई न था। न अम्मा को घर के काम-धंधों से फुरसत थी, न बाबू जी को पढ़ने-लिखने से। दोनों बच्चे आपस में ही सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली दे दिया करते थे।

श्यामा कहती–"क्यों भैया, बच्चे निकलकर फुर्र से उड़ जाएँगे?"

केशव विद्वानों जैसे गर्व से कहता, "नहीं री पगली, पहले पर निकलेंगे। बगैर परों के बेचारे कैसे उड़ेंगे?"

श्यामा–"बच्चों को क्या खिलाएगी बेचारी?"

केशव इस पेचीदा सवाल का जवाब कुछ न दे सकता था।

इस तरह तीन-चार दिन गुज़र गए। दोनों बच्चों की जिज्ञासा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती। अंडों को देखने के लिए वे अधीर हो उठते थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि अब ज़रूर बच्चे निकल आए होंगे। चिड़िया के बच्चों के चारे का सवाल अब उनके सामने आ खड़ा हुआ। चिड़िया बेचारी इतना दाना कहाँ से लाएगी कि सारे बच्चों का पेट भरे। बच्चे भूख के मारे चूँ-चूँ करके मर जाएँगे।

इस मुसीबत का अंदाजा करके दोनों घबरा उठे। दोनों ने फैसला किया कि कॉर्निस पर थोड़ा-सा दाना रख दिया जाए। श्यामा खुश होकर बोली–"तब तो चिड़ा-चिड़िया को चारे के लिए कहीं उड़कर न जाना पड़ेगा, है न?"

केशव – "नहीं, तब क्यों जाएगी?"

श्यामा – "क्यों भैया, बच्चों को धूप न लगती होगी?"

केशव का ध्यान इस तकलीफ की तरफ नहीं गया था। बोला–"ज़रूर तकलीफ हो रही होगी। बेचारे प्यास के मारे तड़पते होंगे। ऊपर छाया भी तो कोई नहीं है।"

आखिर यही फैसला हुआ कि घोंसले के ऊपर कपड़े की छत बना देनी चाहिए। पानी की प्याली और थोड़े-से चावल

Scanned with CamScanner

रख देने का प्रस्ताव भी स्वीकृत हो गया।

दोनों बच्चे बड़े चाव से काम करने लगे। श्यामा माँ से आँख बचाकर मटके से चावल निकाल लाई। केशव ने पत्थर की प्याली का तेल चुपके से ज़मीन पर गिरा दिया और उसे खूब साफ़ करके उसमें पानी भरा।

अब चाँदनी के लिए कपड़ा कहाँ से आए? फिर ऊपर बगैर छड़ियों के ठहरेगा कैसे और छड़ियाँ खड़ी होंगी कैसे?

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़बुन में लगा रहा। आखिरकार उसने यह मुश्किल भी हल कर दी। श्यामा से बोला-"जाकर कूड़ा फेंकने वाली टोकरी उठा लाओ। अम्मा जी को मत दिखाना।"

श्यामा- "वह तो बीच से फटी हुई है। उसमें से धूप न जाएगी?"

केशव ने झुँझलाकर कहा-"तू टोकरी तो ला, मैं उसका सुराख बंद करने की कोई हिकमत निकालूँगा।"

श्यामा दौड़कर टोकरी उठा लाई। केशव ने उसके सुराख में थोड़ा-सा कागज़ ठूँस दिया और तब टोकरी को एक टहनी से टिकाकर बोला-देख, "ऐसे ही घोंसले पर उसकी आड़ कर दूँगा। तो कैसे धूप जाएगी?"

श्यामा ने दिल में सोचा, "भैया कितने चालाक हैं?"

(2)

गर्मी के दिन थे। बाबू जी दफ़्तर गए हुए थे। अम्मा दोनों बच्चों को कमरे में सुलाकर खुद सो गई थीं, लेकिन बच्चों की आँखों में आज नींद कहाँ? अम्मा जी को बहलाने के लिए दोनों दम रोके आँखें बंद किए मौके का इंतज़ार कर रहे थे। ज्यों ही मालूम हुआ कि अम्मा जी अच्छी तरह से सो गई हैं, दोनों चुपके-से उठे और बहुत धीरे-से दरवाज़े की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आए। अंडों की हिफाज़त की तैयारियाँ होने लगीं। केशव कमरे से एक स्टूल उठा लाया, लेकिन जब उससे काम न चला तो नहाने की चौकी लाकर स्टूल के नीचे रखी और डरते-डरते स्टूल पर चढ़ा।

श्यामा दोनों हाथों से स्टूल पकड़े हुए थी। स्टूल, चारों टाँगें बराबर न होने के कारण जिस तरफ ज़्यादा दबाव पाता था, ज़रा-सा हिल जाता था। उस वक्त केशव दोनों हाथों से कॉर्निस पकड़ लेता और श्यामा को दबी आवाज़ से डाँटता-"अच्छी तरह पकड़, वरना उतरकर बहुत मारूँगा।" मगर बेचारी श्यामा का दिल तो ऊपर कॉर्निस पर था। बार-बार उसका ध्यान उधर चला जाता और हाथ ढीले पड़ जाते।

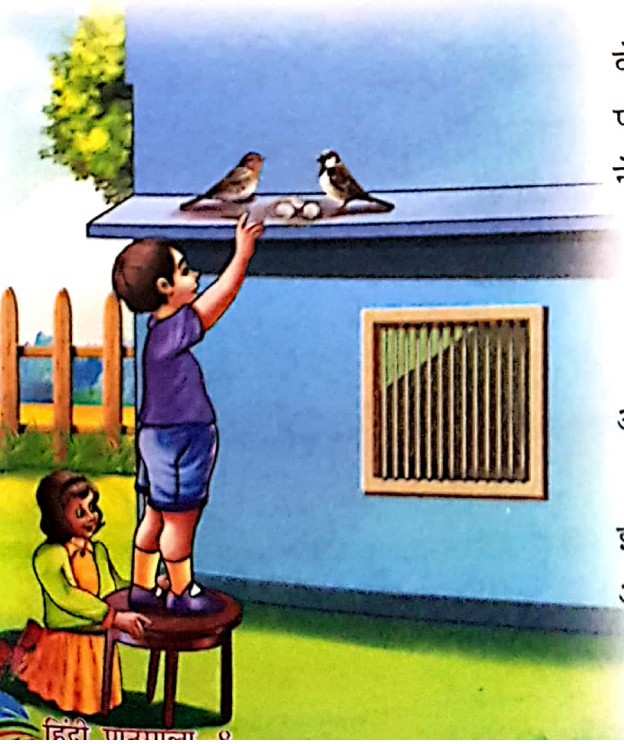

केशव ने ज्यों ही कॉर्निस पर हाथ रखा, दोनों चिड़ा-चिड़िया उड़ गए। केशव ने देखा, कॉर्निस पर थोड़े तिनके बिछे हुए हैं और उन पर तीन अंडे पड़े हैं। जैसे घोंसले उसने पेड़ों पर देखे थे, वैसा कोई घोंसला नहीं है। श्यामा ने नीचे से पूछा-"कै बच्चे हैं भैया?"

केशव-"तीन अंडे हैं, अभी बच्चे नहीं निकले।"

श्यामा-"ज़रा हमें दिखा दो भैया, कितने बड़े हैं?"

केशव-"दिखा दूँगा, पहले ज़रा चिथड़े ले आ, नीचे बिछा दूँ। बेचारे अंडे तिनकों पर पड़े हैं।"

श्यामा दौड़कर पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लाई। केशव ने झुककर कपड़ा ले लिया, उसकी कई तह करके उसने एक गद्दी बनाई और उसे तिनकों पर बिछाकर तीनों अंडे धीरे-से उस पर रख दिए।

श्यामा ने फिर कहा-"हमको भी दिखा दो भैया।"

Scanned with CamScanner

केशव-"दिखा दूँगा, पहले ज़रा वह टोकरी तो दे दे, ऊपर छाया कर दूँ।"

श्यामा ने टोकरी नीचे से थमा दी और बोली-"अब तुम उतर आओ, मैं भी तो देखूँ।"

केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा-"जा, दाने और पानी की प्याली ले आ, मैं उतर आऊँ तो तुझे दिखा दूँगा।"

श्यामा प्याली और चावल भी लाई। केशव ने टोकरी के नीचे दोनों चीज़ें रख दीं और आहिस्ता से उतर आया।

श्यामा ने गिड़गिड़ाकर कहा- "अब हमको भी चढ़ा दो भैया।"

केशव-"तू गिर पड़ेगी।"

श्यामा - "न गिरूँगी भैया, तुम नीचे से पकड़े रहना।"

केशव - "ना-ना, कहीं तू गिर-गिरा पड़ी तो अम्मा जी मेरी चटनी ही कर डालेंगी। कहेंगी कि तूने ही चढ़ाया था। क्या करेगी देखकर? अब अंडे बड़े आराम-से हैं। जब बच्चे निकलेंगे तो उनको पालेंगे।"

दोनों चिड़ा-चिड़िया बार-बार कॉर्निस पर आते और बगैर बैठे ही उड़ जाते थे। केशव ने सोचा, हम लोगों के डर से नहीं बैठ रहे हैं। स्टूल उठाकर कमरे में रख आया, चौकी जहाँ की थी, वहाँ रख दी।

श्यामा ने आँखों में आँसू भरकर कहा-"तुमने मुझे नहीं दिखाया, मैं अम्मा जी से कह दूँगी।"

केशव - "अम्मा जी से कहेगी तो बहुत मारूँगा, कहे देता हूँ।"

श्यामा - "तो तुमने मुझे दिखाया क्यों नहीं?"

केशव - "और गिर पड़ती तो चार सर न हो जाते!"

श्यामा - "हो जाते तो हो जाते। देख लेना मैं कह दूँगी!" इतने में कोठरी का दरवाज़ा खुला और माँ ने धूप से आँखों को बचाते हुए कहा-"तुम दोनों बाहर कब निकल आए? मैंने कहा न था कि दोपहर को न निकलना? किसने किवाड़ खोला?" किवाड़ केशव ने खोला था लेकिन श्यामा ने माँ से यह बात नहीं कही। उसे डर लगा कि भैया पिट जाएँगे। केशव दिल में काँप रहा था कि कहीं श्यामा कह न दे। अंडे नहीं दिखाए थे, इससे अब उसे श्यामा पर विश्वास न था। श्यामा सिर्फ मुहब्बत के मारे चुप थी या इस कसूर में हिस्सेदार होने की वजह से, इसका फैसला नहीं किया जा सकता। शायद दोनों ही बातें थीं।

माँ ने दोनों को डाँट-डपटकर फिर कमरे में बंद कर दिया और आप धीरे-धीरे उन्हें पंखा झलने लगीं। अभी सिर्फ दो बजे थे। बाहर तेज लू चल रही थी। अब दोनों बच्चों को नींद आ गई थी।

चार बजे यकायक श्यामा की नींद खुली। किवाड़ खुले हुए थे। वह दौड़ी हुई कॉर्निस के पास आई और ऊपर की तरफ ताकने लगी। टोकरी का पता न था। संयोग से उसकी नज़र नीचे गई और वह उलटे पाँव दौड़ती हुई कमरे में जाकर ज़ोर से बोली-"भैया, अंडे तो नीचे पड़े हैं, बच्चे उड़ गए।"

केशव घबराकर उठा और दौड़ा हुआ बाहर आया तो क्या देखता है कि तीनों अंडे नीचे टूटे पड़े हैं और उनसे कोई चूने की-सी चीज़ बाहर निकल आई है। पानी की प्याली भी एक तरफ टूटी पड़ी है।

उसके चेहरे का रंग उड़ गया। सहमी हुई आँखों से ज़मीन की तरफ देखने लगा। श्यामा ने पूछा-"बच्चे कहाँ उड़ गए भैया?"

Scanned with CamScanner

केशव ने करुण स्वर में कहा-"अंडे तो फूट गए।"

श्यामा - "और बच्चे कहाँ गए?"

केशव - "तेरे सर में। देखती नहीं है अंडों में से उजला-उजला पानी निकल आया है। वही दो-चार दिनों में बच्चे बन जाते।" माँ ने सोटी हाथ में लिए हुए पूछा-"तुम दोनों वहाँ धूप में क्या कर रहे हो?"

श्यामा ने कहा-"अम्मा जी, चिड़िया के अंडे टूटे पड़े हैं।"

माँ ने आकर टूटे हुए अंडों को देखा और गुस्से से बोलीं-"तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा?"

अब तो श्यामा को भैया पर ज़रा भी तरस न आया। उसी ने शायद अंडों को इस तरह रख दिया कि वे नीचे गिर पड़े। इसकी उसे सज़ा मिलनी चाहिए। बोली-"इन्होंने अंडों को छेड़ा था, अम्मा जी।" माँ ने केशव से पूछा-"क्यों रे?"

केशव भीगी बिल्ली बना खड़ा रहा।

माँ - "तू वहाँ पहुँचा कैसे?"

श्यामा - "चौकी पर स्टूल रखकर चढ़े, अम्मा जी।"

केशव - "तू स्टूल थामे नहीं खड़ी थी?"

श्यामा - "तुम्हीं ने तो कहा था।"

माँ - "तू इतना बड़ा हुआ, तुझे अभी इतना भी नहीं मालूम कि छूने से चिड़ियों के अंडे गंदे हो जाते हैं। चिड़िया फिर उन्हें नहीं सेती।"

श्यामा ने डरते-डरते पूछा-"तो क्या चिड़िया ने अंडे गिरा दिए हैं, अम्मा जी?"

माँ - "और क्या करती। केशव के सिर इसका पाप पड़ेगा। हाय, हाय, तीन जानें ले लीं दुष्ट ने!", केशव रोनी सूरत बनाकर बोला- "मैंने तो सिर्फ अंडों को गद्दी पर रख दिया था, अम्मा जी।" माँ को हँसी आ गई। मगर केशव को कई दिनों तक अपनी गलती पर अफ़सोस होता रहा। अंडों की हिफाज़त करने के जोश में उसने उनका सत्यानाश कर डाला। इसे याद कर वह कभी-कभी रो पड़ता था। दोनों चिड़ियाँ वहाँ फिर न दिखाई दीं।

-प्रेमचंद

जीवन मूल्य : हमें इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि हमारी वजह से दूसरों को किसी प्रकार का कोई कष्ट न पहुँचे।

शब्दार्थ

कार्निस	- दीवार की कँगनी	तसल्ली	- दिलासा
पेचीदा	- कठिन, जटिल	सुराख	- छेद
उधेड़बुन	- विचारों की उलझन जिनमें कोई निर्णय लेना सरल न हो	चिथड़े	- फटे-पुराने कपड़े
हिक़मत	- तरकीब, उपाय	हिफाज़त	- सुरक्षा
यकायक	- अचानक, एकाएक	जोश	- उत्साह

Scanned with CamScanner

अभ्यास

पाठ्यविषयी मूल्यांकन (Curricular Assessment)

लिखित [Writing Skills (comprehension, spelling, vocabulary, grammar)]

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—**
   (क) चिड़िया के अंडों का पता लगने पर श्यामा व केशव के व्यवहार में क्या परिवर्तन आ गया था?
   (ख) अंडों की हिफाज़त की तैयारियों में केशव व श्यामा ने क्या-क्या किया?
   (ग) अंडे टूट जाने पर माँ की क्या प्रतिक्रिया थी?
   (घ) केशव व श्यामा के परस्पर व्यवहार को अपने शब्दों में लिखिए।
   (ङ) केशव किस बात को याद करके रो पड़ता था?

2. **सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—**
   (क) केशव ने श्यामा से .... फेंकने वाली टोकरी उठा लाने के लिए कहा।
   (ख) केशव की तत्परता पर श्यामा दिल में सोच रही थी कि भैया कितने .... हैं।
   (ग) केशव के छूने से चिड़िया के अंडे .... हो गए थे।
   (घ) अंडों की हिफाज़त करने के जोश में केशव ने उनका .... कर डाला।
   (ङ) भैया! अंडे तो नीचे पड़े हैं, ... उड़ गए।

3. **सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए—** [Multiple Choice Questions (MCQs)]
   (क) चिड़ियों के अंडों के विषय में मन में प्रश्न उठने पर दोनों बच्चे किससे प्रश्नों का उत्तर पूछते थे?
   (i) माता से ◯ (ii) पिता से ◯ (iii) आपस में ही ◯
   (ख) श्यामा ने केशव का ध्यान चिड़िया की किस तकलीफ की ओर दिलाया, जिस पर अभी केशव का ध्यान न गया था?
   (i) बच्चों को भूख लगने की ◯ (ii) बच्चों को प्यास लगने की ◯ (iii) बच्चों को धूप लगने की ◯
   (ग) केशव ने चिड़िया के लिए पानी किसमें रखा?
   (i) काँच की प्याली में ◯ (ii) पत्थर की प्याली में ◯ (iii) टूटी हुई प्याली में ◯
   (घ) केशव के कॉर्निस पर हाथ रखते ही ....।
   (i) एक चिड़िया उड़ गई ◯ (ii) चिड़ा-चिड़िया दोनों उड़ गए ◯ (iii) अंडे नीचे गिर गए ◯
   (ङ) अंडे कॉर्निस से नीचे किसने गिराए थे?
   (i) चिड़िया ने ◯ (ii) केशव ने ◯ (iii) श्यामा ने ◯

4. **सही कथन पर (✓) का तथा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए—**
   (क) केशव और उसकी बहन श्यामा दोनों बड़े ध्यान से चिड़िया को वहाँ आते-जाते देखा करते। ◯
   (ख) चिड़िया ने सर्दी के दिनों में अंडे दिए थे। ◯
   (ग) श्यामा ने स्टूल पर चढ़कर अंडों को देखा था। ◯

Scanned with CamScanner